RKSK
Rashtriya Kishor
Swasthya Karyakram
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम

अब ना होगी कोई भूल
सरिता रोज जाएगी स्कूल

स्कूल से लौटते हुए माधव और मुस्कान बातें कर रहे हैं, पीछे से आशा दीदी आ रही हैं –

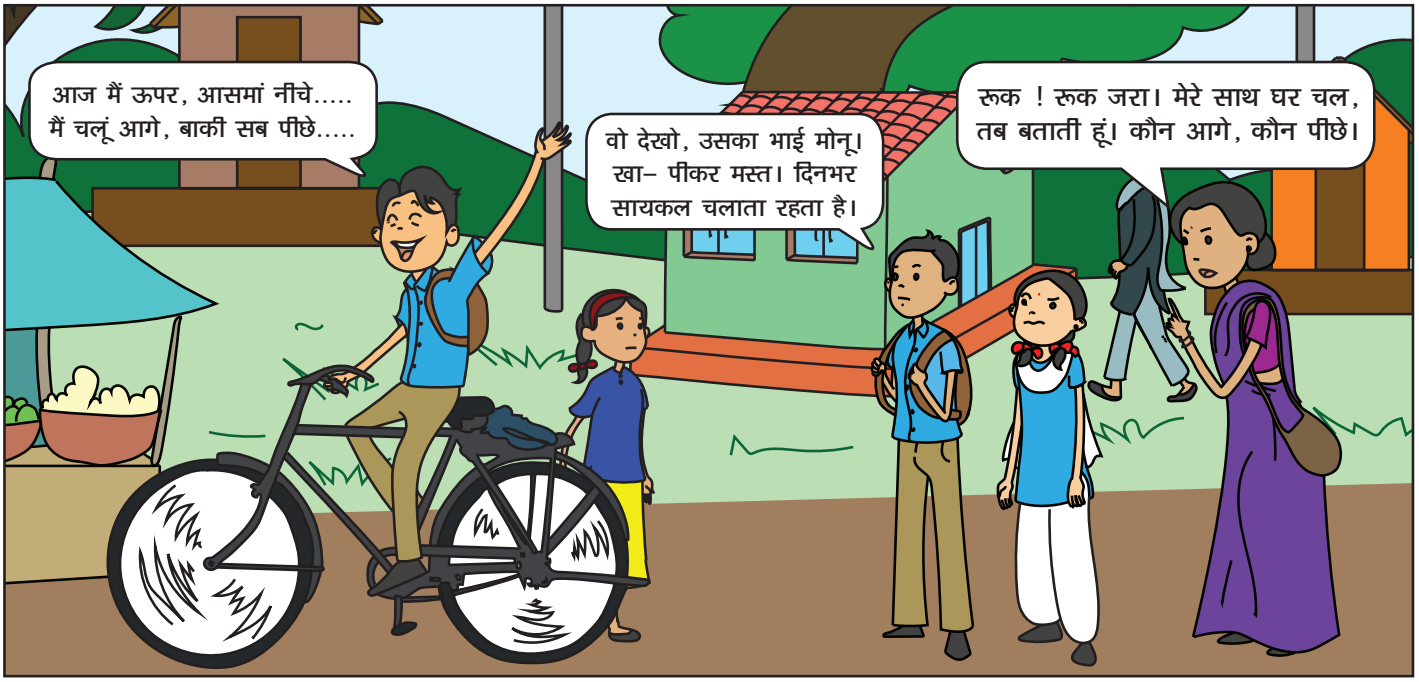

सरिता के घर में
ये क्या ? इन्हें आंगनवाड़ी भेजोगी तो वहां पोषक आहार मिलेगा। पेट भर खा पाएंगे।
वो .. मैं तो मजदूरी के लिए जल्दी निकल गई.. तो ..

और ये सरिता, सबको खिलाती है और खुद कुछ खाती नहीं। कितनी कमजोर हो गई है ?
मोनू को तो भरपेट देना पड़ता हैं, लड़का जो है। बचा हुआ खा लेती है सरिता।

दाल–रोटी खाओ, प्रभु के गुण गाओ। जो बच जाए उसे सरिता को खिलाओ।
चुप! उस बचे हुए से सरिता का पेट कैसे भरेगा सोचा है? तुझसे तो बड़ी है वह!

मैं तो स्कूल में भी खाता हूं। पढ़ाई, फिर खाना, फिर पढ़ाई।
मैं जब स्कूल जाती हूं तो पढ़ाई भी नहीं छूटती और भरपेट खा भी लेती हूं।

तो रोज जाया कर ना। बढ़ते शरीर को पोषण की जरूरत होती है।
फिर इन्हें कौन संभालेगा?

और दीदी घर के काम कौन करेगा ?
क्यों तू क्या सिर्फ खाने और खेलने के लिए है ? तुम दोनों मिलकर घर का काम करो और फिर स्कूल जाओ।

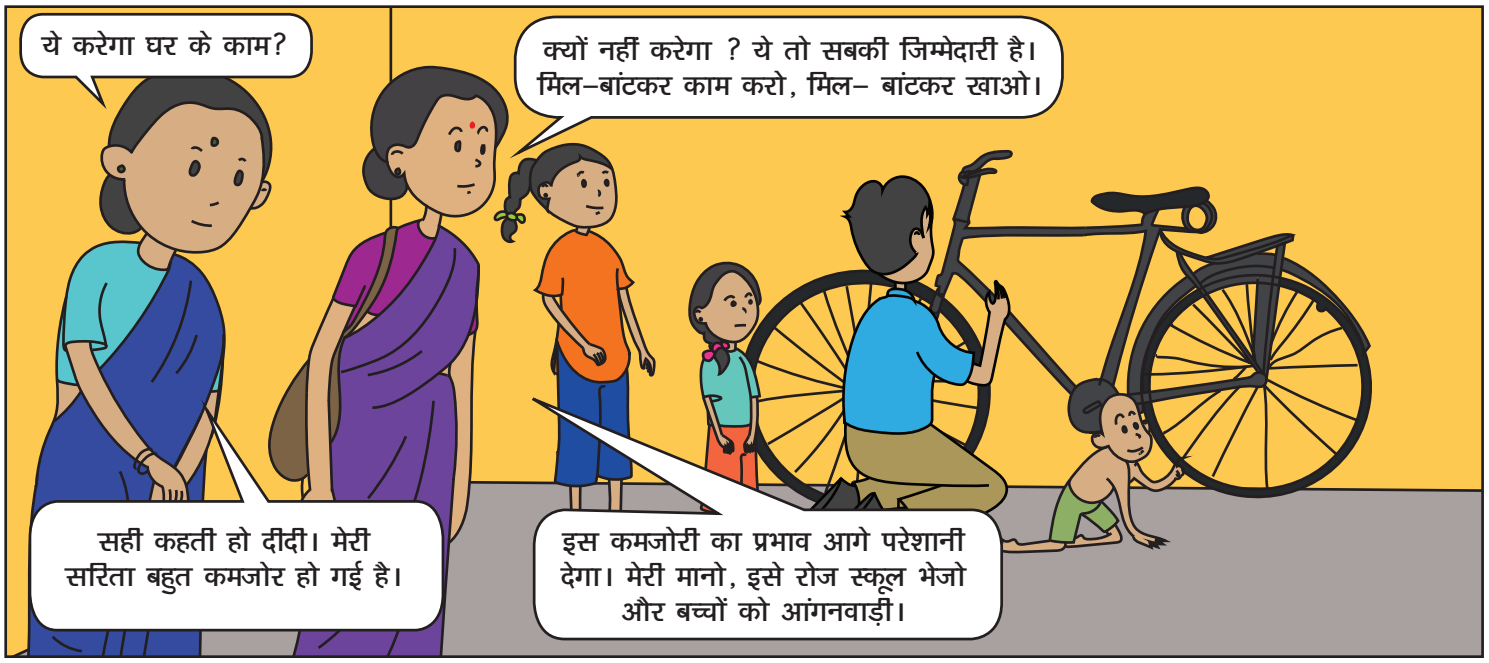
ये करेगा घर के काम?
क्यों नहीं करेगा ? ये तो सबकी जिम्मेदारी है। मिल–बांटकर काम करो, मिल– बांटकर खाओ।
सही कहती हो दीदी। मेरी सरिता बहुत कमजोर हो गई है।
इस कमजोरी का प्रभाव आगे परेशानी देगा। मेरी मानो, इसे रोज स्कूल भेजो और बच्चों को आंगनवाड़ी।

उस दिन मेडम भी आई थीं समझाने। मैं न पढ़ सकी पर सरिता को पूरी पढ़ाई करवाऊंगी।
ये हुई न बात। तो तय रहा। कल से सरिता रोज स्कूल जाएगी।

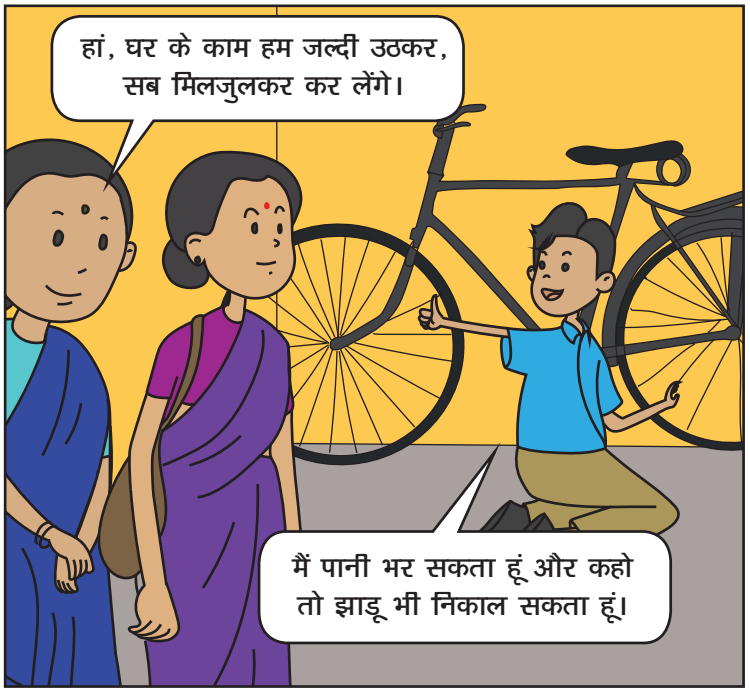
हां, घर के काम हम जल्दी उठकर, सब मिलजुलकर कर लेंगे।
मैं पानी भर सकता हूं और कहो तो झाड़ू भी निकाल सकता हूं।

रहने दे। ये घर के काम हैं। तू तो बाहर का काम हो तो कर देना।
क्यों भाभी ? मोनू घर के काम क्यों नहीं कर सकता? इस फर्क को हमें बदलना है।

तब तो मैं भी बाहर के काम करूंगी। क्या मैं हाट करने जा सकती हूं ?
हां, इस बार हाट में मेरे साथ तू चलना। पर सामान उठाना पड़ेगा । हां !

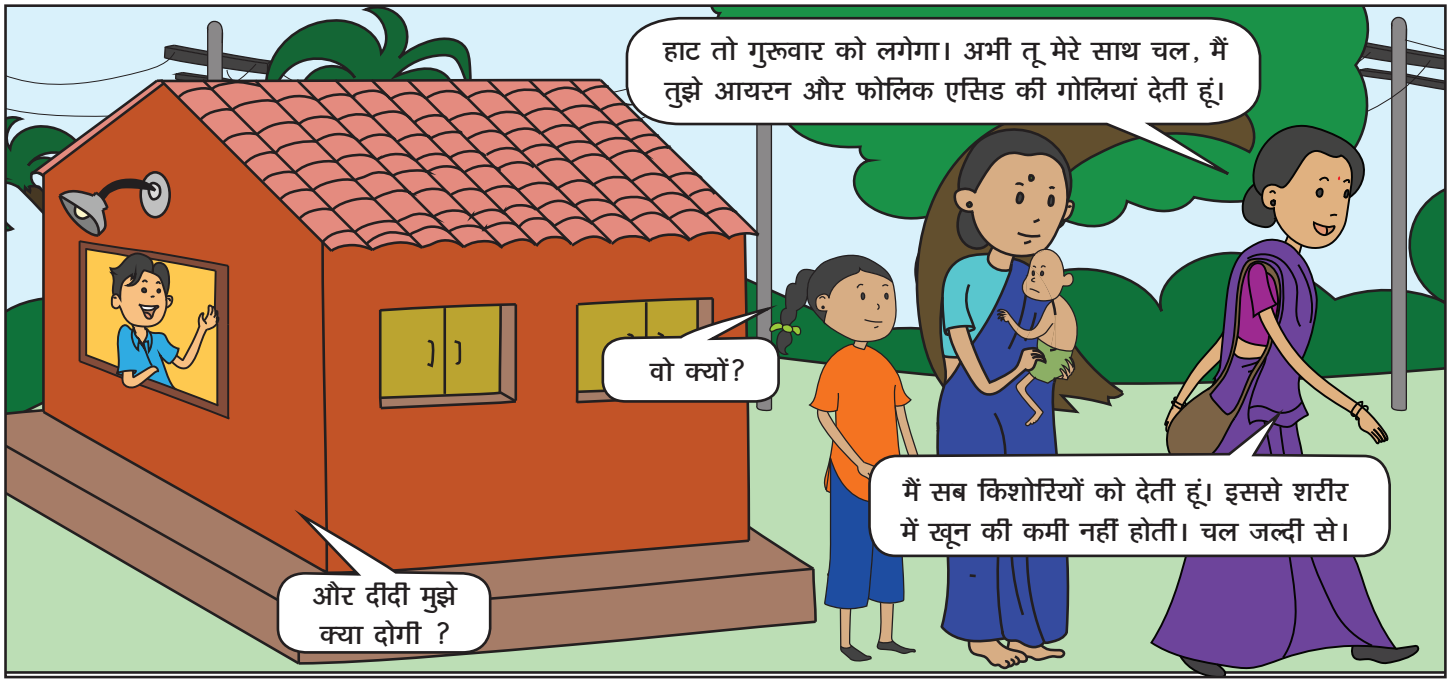
हाट तो गुरूवार को लगेगा। अभी तू मेरे साथ चल, मैं तुझे आयरन और फोलिक एसिड की गोलियां देती हूं।
वो क्यों?
मैं सब किशोरियों को देती हूं। इससे शरीर में खून की कमी नहीं होती। चल जल्दी से।
और दीदी मुझे क्या दोगी ?

जिम्मेदारी। मोनू, सरिता के आने तक अपने भाई-बहन को संभाल। मां खाना बनाएगी।
दीदी, और आना।

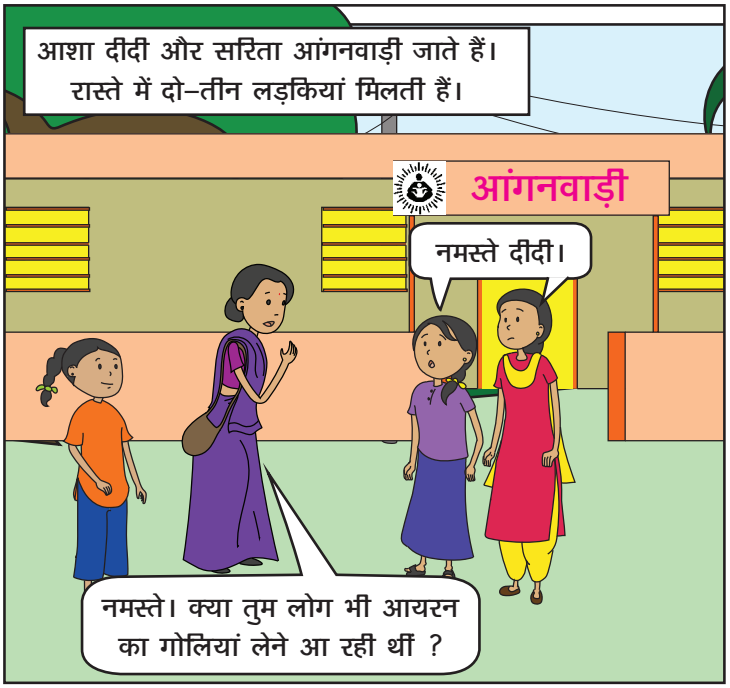
आशा दीदी और सरिता आंगनवाड़ी जाते हैं। रास्ते में दो-तीन लड़कियां मिलती हैं।
आंगनवाड़ी
नमस्ते दीदी।
नमस्ते। क्या तुम लोग भी आयरन का गोलियां लेने आ रही थीं ?

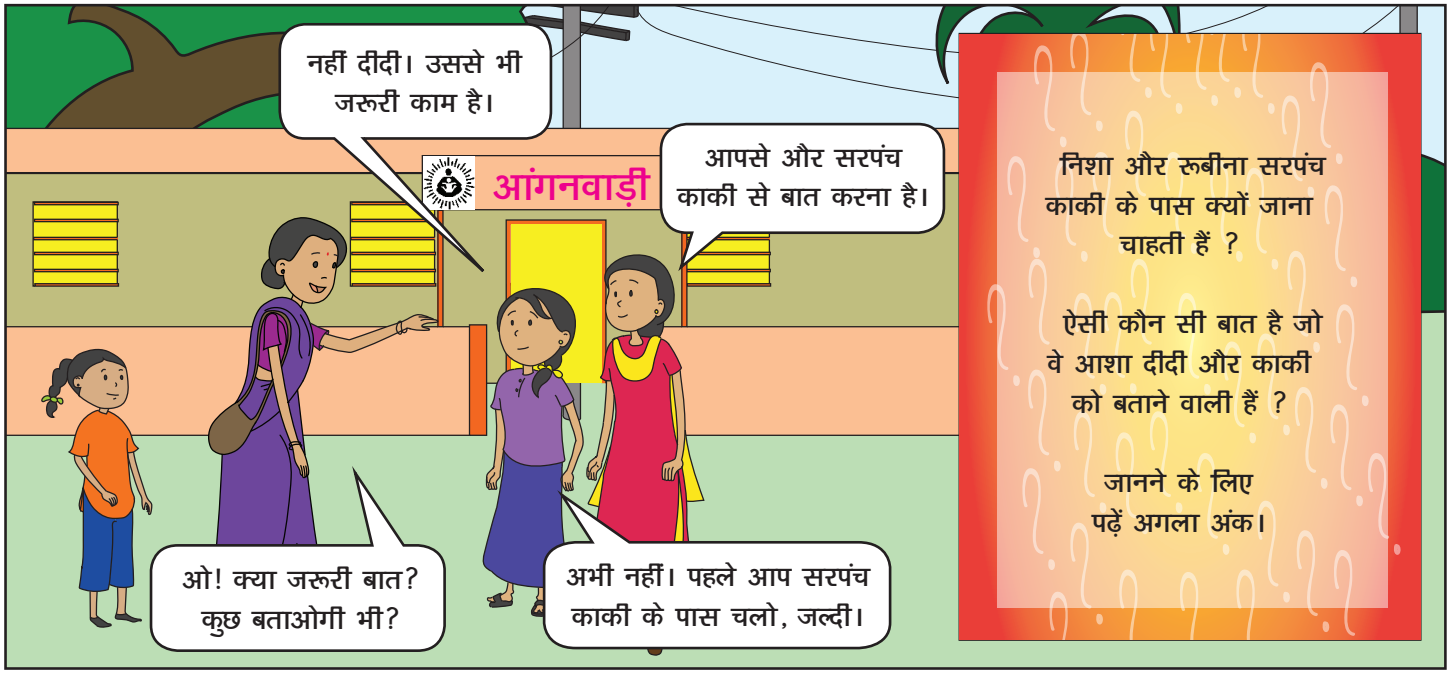
नहीं दीदी। उससे भी जरूरी काम है।
आंगनवाड़ी
आपसे और सरपंच काकी से बात करना है।
ओ! क्या जरूरी बात? कुछ बताओगी भी?
अभी नहीं। पहले आप सरपंच काकी के पास चलो, जल्दी।
निशा और रूबीना सरपंच काकी के पास क्यों जाना चाहती हैं ?
ऐसी कौन सी बात है जो वे आशा दीदी और काकी को बताने वाली हैं ?
जानने के लिए पढ़ें अगला अंक।

पढ़ी गई कहानी के अनुसार, हम कुछ मुद्दों पर चर्चा करेंगे:

जेण्डर की समझ

-माधव को क्यों शक था कि घरवाले सरिता को स्कूल नहीं भेजेंगे ?
-आशा दीदी ने ऐसा क्यों कहा कि लड़कियों को खाने और पढ़ने की नहीं घर के कामों की चिंता रहती है ? यह चिंता लड़कों को क्यों नहीं होती ?

लैंगिक भेदभाव

-सरिता का भाई मोनू घर के काम व जिम्मेदारियां क्यों नहीं बांटता ?
-स्कूल न जाने और भरपेट न खाने से सरिता के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
-सरिता की मां ने ऐसा क्यों कहा कि मोनू घर के काम नहीं बाहर के काम करेगा ?

याद रखने वाले मुख्य संदेश

जेण्डर की समझ

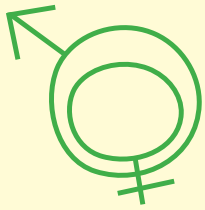

- प्राकृतिक रूप से महिला व पुरूष की थारीरिक संरचना में कुछ जैविकीय अंतर हैं। इन्हें लिंग कहा जाता है।
- जबकि सामाजिक रूप से महिला व पुरूष को दी गई भूमिकाएं व जिम्मेदारियां जेण्डर कहलाते हैं।
- हमारे जैविक या सामाजिक भेद के बावजूद हम समान हैं और हम सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं।

लैंगिक भेदभाव

- हमारे समाज को पुरूष प्रधान समाज कहा जाता है। जबकि समाज में महिला व पुरूष दोनों की संख्या लगभग समान है।
- कई लोगों का विचार है कि लड़के लड़कियों से श्रेष्ठ होते हैं। इस भेदभाव की जड़ में कुछ धारणाएं हैं। इससे उत्पन्न भेद कई तरह से सामने आते हैं। जैसे– लड़कियों को पेटभर भोजन न देना, उन्हें स्कूल न भेजना, कम उम्र में ही उन पर घर के कार्यों की जिम्मेदारी सौंपना, उन्हें खेलने के अवसर न देना, उन्हें निर्णय न लेने देना, उन पर रोक–टोक लगाना आदि।
- समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाएं हमारे व्यवहार को प्रभावित करती हैं। भेदभाव से लड़कियों के विकास के अवसर सीमित हो जाते हैं और इससे उनके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- हमारा प्रयास हो कि समाज में लड़के–लड़की, महिला–पुरूष में किसी तरह का भेदभाव न हो। सभी को विकास के समान अवसर मिलें।
- लिंग आधारित प्रचलित मान्यताओं को बदलना एक कठिन कार्य है। इसके लिए पहले हमें अपनी और परिवार की मान्यताओं को बदलना होगा। यह धीमी गति से होनेवाला परिवर्तन है। परिवार व समाज में बदलाव लाने के लिए धैर्य की जयरत होगी।

साथिया

भूमिकाएं और जिम्मेदारियां

- आशा की सहायता से गांव में 10 से 19 वर्ष की आयु के सभी किशोर/किशोरियों की सूची तैयार करना।
- स्वास्थ्य एवं संरक्षण के मुद्दों के संबंध में मिथकों और भ्रांतियों को दूर करने में किशोर/किशोरियों की सहायता करना।
- आशा/ए.एन.एम. की सहायता से आवश्यकता पड़ने पर चिकित्सीय व सुरक्षा संबंधी जरुरत में दूसरी जगह रेफर करवाना।
- किशोर/किशोरियों की बातों की हमेशा गोपनीयता बनाए रखना।
- बच्चों और किशोर/किशोरी पर हिंसा के मामलों को पुलिस या बाल संरक्षण अधिकारी को सूचित करना।
- हिंसा के शिकार व्यक्ति की चिकित्सा देखभाल एवं परामर्श लेने और कानूनी सहायता हासिल करने में सहायता करना।
- धर्म, जाति, वर्ग, जेंडर या वैवाहिक स्थिति पर विचार किए बिना सभी किशोर/किशोरियों तक पहुंचना।

पहला अंक

दूसरा अंक

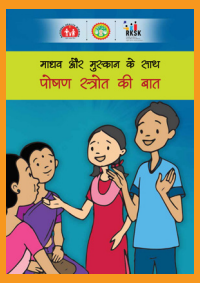

तीसरा अंक

चौथा अंक

पांचवां अंक

छठा अंक

UNFPA